गवाहियाँ

अगली पीढ़ी को अगुवाई सौंपने के दस सिद्धान्त

बाइबल में अगली पीढ़ी को अगुवाई सौंपने के अनेक वर्णन पाए जाते हैं: मूसा ने यहोशू को अपने साथ रखा और उसे तैयार किया कि वह इस्राएलियों की अगुवाई कर सके; राजाओं की पुस्तकों को पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि किस तरह से सहीं तरीकों को अनदेखा किए जाने के कारण यह सेवकाई समाप्त हो गई।

हमेशा की तरह वर्तमान में भी नेतृत्व को दूसरी पीढ़ी या अन्य लोगों के हाथों अच्छी भावना के साथ सौंपना अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनेक महत्वूपर्ण और अनिवार्य बातों को हमें ध्यान में रखने की आवश्यकता है: परमेश्वर की बुलाहट और सेवा करने और सेवा लेने की इच्छा और दीनता – कार्यभार लेने वाले अगुवे और कार्यभार सौंपने वाले अगुवे दोनों के लिए आवश्यक है।

(बाए से दांए): युवा अगुवा जूडिथ मेनेंडेज़ और याब्स समिति सदस्य जेन्टाइन ब्राउवर–हुइसमनत, स्पेन में ऐनाबैपटिस्ट चर्च इन स्पेन (एमीएचसीइ–ऐनाबैपटिस्ट, मेनोनाइट्स, मेनोनाइट एण्ड ब्रदर्स इन ख़ाइस्ट ऑफ स्पेन) की एक रिट्रीट। फोटो– हेंक स्टेनवर्स

24 से 26 फरवरी 2018 तक आयोजित अपने अगुवों के वार्षिक सम्मेलन में, ऐनाबैपटिस्ट चर्च ऑफ स्पेन (एएमवायएचसीइ – स्पेन के ऐनाबैपटिस्ट, मेनोनाइट, और ब्रदर्स इन ख़ाइस्ट) ने मसीह के समान नेतृत्व करने के 10 सिद्धान्तों को पहचाना और यह सीखा कि किस प्रकार से इन्हें अगली पीढ़ी के लिए विकसित करना है।

1. हमें स्वयं से लड़ना है कि हम अपने इतिहास और अपनी आदत पर जय प्राप्त कर सकें, और आरम्भिक चेलों और आरम्भिक कलीसिया के जीवन की ओर लौट सकें।
2. यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने वरदानों को पहचानें (स्वाभाविक और आत्मिक दोनों) और यह भी कि हमारे ये वरदान दूसरों के द्वारा पहचाने जाएं, ताकि इन्हें बढ़ने दिया जाए।
3. यह महत्वपूर्ण है कि हम एक दूसरे के लिए आदर्श बनें और न सिर्फ परमेश्वर की सेवा के बोझ को बल्कि सेवा की आशा को भी सामने लाएं।
4. युवाओं के हृदय में परमेश्वर के प्रति प्यास को जगाने की बुनियादी आवश्यकता है।
5. नया नियम में, पासवान नहीं हुआ करते थे: हमें महान पासवानों की आवश्यकता नहीं है परन्तु ऐसे बहुत से छोटे छोटे सेवकों की आवश्यकता है जो परमेश्वर की सेवा करने को उत्सुक हो।
6. युवाओं को संसाधनों की आवश्यकता होती जब वे अपने वरदानों का उपयोग करना चाहते हैं, जब वे परमेश्वर की आवाज को सुनते हैं, और सेवा के लिए अपने आप को समर्पित करते हैं।
7. युवाओं को कभी भी अकेला नहीं चलना चाहिए। उनके साथ अवश्य ही कोई न कोई हो जो उनकी सुरक्षा, मार्गदर्शन, और भरोसा के लिए उपलब्ध हो, और जब वे गिरें तो उन्हें उठा सकें।
8. बेहतर होगा कि हम साथ मिलकर अभी से बदलना आरम्भ कर दें, इसका आरम्भ ऐसे युवाओं को सशक्त बनाने के द्वारा

करें जो पहले से ही सेवकाई में आ चुके हों।

9. शिष्यता एक प्रक्रिया है जिसमें हम एक दूसरे के साथ और यीशु के साथ मिलकर यात्रा करते हैं। इसके लिए समर्पण, संकल्प, और रिश्तों की समझ की आवश्यकता है (अधिकार को मान कर उसके आगे समर्पण करने की)

10. मार्गदर्शन एक ऐसी भेंट है जिसे अनुभवी लोग हमें दे सकते हैं।

इस कार्यक्रम में भाग लेने वाली एक युवा अगुवा जूडिथ मेनेंडेज़ ओलाल्ला का मानना है, ''वार्तालाप हमेशा अच्छी है, और तब और अधिक अच्छी जब मन में एक समान लक्ष्य हो। युवाओं की तुलना में अनुभवी अगुवों के मन में अधिक अभिलाषा हो कि पहिया घुमता रहे और मशाल आगे बढ़ती जाए। यह तथ्य कि इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए युवाओं को बड़ी संख्या में आमंत्रित किया इस बात का व्यावहारिक प्रमाण है कि हमारे साथ कार्य और सेवा करने की उनकी इच्छा में सच्चाई है।

सबसे बड़ी चुनौती यह नहीं कि किस प्रकार से जिम्मेदारी को अगली पीढ़ी को सौंपी जाए, परन्तु यह कि एक साथ मिलकर काम करना कैसे सीखा जाए।''

– मेनोनाइट वर्ल्ड कॉफ्रेंस विज्ञप्ति